**International Journal of Hindi Research**
**ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22**
**Received: 23-06-2019; Accepted: 25-07-2019**
**www.hindijournal.com**
**Volume 5; Issue 5; September 2019; Page No. 72-73**

# डॉ. नरेंद्र मोहन का नाटकों में योगदान

**डॉ.मधुकर बाबुराव राठोड**
सहयोगी प्राध्यापक, प्रा.रामकृष्ण मोरे महाविदयालय,आकुर्डी पुणे, महाराष्ट्र, भारत

**प्रस्तावना**
डॉ.नरेंद्र मोहन आधुनिक हिंदी नाटककारों में एक सृजनशील नाटककार के रूप में प्रसिध्द।उन्होंने नाटक, उपन्यास, आलोचना, डायरी, संस्मरण आदि साहित्यिक विधा में योगदान दिया है.इनके नाटकों में सामाजिकता का स्वर उभरकर आया है। नरेंद्रजी का रचना संसार अंत्यत व्यापक तथा कलात्मक है। मूल पंजाबी होते हुए भी उन्होंने हिंदी,अग्रेजी और मराठी भाषाओं में ज्ञान अर्जित किया है।उन्होंने पंजाबी तथा हिंदी में समान अंतर से नाटय लेखन किया है.डॉ.नरेंद्र का नाटक साहित्य ही उनके व्यक्तित्व का निखार है ं

**डॉ.नरेंद्र का व्यक्तित्वः** डॉ.नरेंद्र आधूनिक नाटक के बहुमुखी प्रतिभासंपन्न रचनाकार है। कवि अलोचक,नाटककार के रूप में उनका अमूल्य योगदान रहा है।अपितु वे एक साहित्यकार ही नहीं बल्कि एक कुशल अध्यापक एवं मिलनसार व्यक्ति भी हैं।नाटकधर्मिता,भाषा,प्रभुत्वता तथा नाटक की गहरी सोच ने उनके व्यक्तित्व को और भी उज्जवल बना दिया है।

**जन्मः** डॉ.नरेंद्र मोहन का जन्म 30 जुलाई,1935 में तत्कालिक भारत और वर्तमान पाकिस्तान के लाहौर प्रांत में हुआ.इन्होंने अपने बाल्यकाल में अत्यंत उतार–चढाव को देखा तथा भोगा भी है।अपनी 12 वर्ष की आयु में ही भारत और पाकिस्तान के विभाजन स्थिति को देखा है.विभाजन के समय का संपूर्ण आक्रोश,संताप,मारकाट,विस्थापन आदि का परिणाम उनके बालमानस पर गहरा असर कर दिया था। ये सभी स्थितियॉ उनके जीवन का एक अविभाज्य घटक बन गई थी.किंतु स्वाधिनता प्राप्त होने के बाद 19 अगस्त 1947 को वे अपने माता–पिता के साथ अमृतसर में आकर बस गये थे।डॉ नरेंद्र मोहन भारतीय संस्कृति,सभ्यता के उपासक रहे है। उनके पिता का नाम रूपलाल शर्मा और मॉ का नाम विदयावती शर्मा दानों आदर्श पति–पत्नी के रूप में माने जाते थे।डॉ.नरेंद मोहन का विवाह 29 मई 1962 में अनुराधाजी से हुआ था,अनुराधाजी एक कर्तव्यदक्ष एवं सहधर्मचारिणी है।

**स्वभावः** डॉ.नरेंद्र मोहन मधुरभाषी एवं गभीर स्वभाव के व्यक्ति थे। वे स्वामी रामतीर्थ और स्वामी विवेकानंद के व्यक्तित्व से अत्यंत प्रभावित रहे है।

**शिक्षाः** डॉ.नरेंद्र मोहन ने 1952 में मैटिध्क की परीक्षा उत्तीर्ण हुए. 1956 में पंजाब विश्वविदयालय से बी.ए.उत्तीर्ण हुए.1958 से पंजाब विश्वविदयालय से एम.ए.की उपाधि प्राप्त की.सन 1966 में पंजाब विश्वविदयालय से 'आधुनिक कविता'पर पीएच.डी.की उपाधि प्राप्त की है ।

**अध्यापन कार्यः** डॉ.नरेंद्र मोहनजी अध्यापन कार्य में अत्यंत सक्रिय रहे है.उन्होंने सन 1985 में खालसा कॉलेज लुधियाना से अपना अध्यापन कार्य को प्रारंभ किया.बाद वे दिल्ली के श्री.गुरूतेग बहादुर खासजा कॉलेज में आ गये । बाद में सन 1988 में वे हिंदी विभ्राग दिल्ली विश्वविदयालय में रीडर पद पर नियुक्त हुए. एक अध्यापक एवं निर्देशक के रूप में इनका योगदान बडा अहम रहा है ।

**डॉ.नरेंद्र मोहन का कृतित्वः** हिंदी साहित्य क्षेत्र में इनका स्थान नाटक के रूप में महत्वपूर्ण रहा है । इनकी निजी जिंदगी स्मृतियॉ,संघर्ष और त्रासदी उनकी रचनात्मक मानसिकता की नींव मानी जाती है.उनके विचारों में हमेशा स्पष्टता और ईमानदारी एवं न्यायशीलता के दर्शन लक्षित होते है।

**नाटक साहित्य में योगदानः** डॉ.नरेंद्र मोहन कवि,आलोचक के साथ–साथ एक उत्कृष्ठ एवं सफल नाटककार के रूप में उनकी ख्याति है.हिंदी नाटक साहित्य को उनके नाटकों ने एक नई दिशा प्रदान की है। उनके अब तक 7 नाटक प्रकाशित हुए है।
1.कहै कबीर सुनो भाई साधो सन 1988।
2.सीगधारी सन 1988।
3.कलंदर सन 1991।
4.नो मैंस लैड सन 1994।
5.अभंग गाथा सन 2000।
6.मिस्टर जिन्ना सन 2005।
7 मंच अधंरे में सन 2008।

उनकी ये सभी रचनाएॅ नई दिल्ली के प्रकाशनों से प्रकाशित हुई है।डॉ.नरेंद्र मोहन ने हिंदी नाटकों के अलावा पंजाबी भाषा में भी नाटक लिखें हैं।
कहै कबीर सुनो भाई साधो :डॉ.नरेंद्र मोहनजी का यह पहला नाटक है.इस नाटक का प्रमुख चरित्र कबीर है.जो सामाजिक विसंगतियों,बुराईयों,अंधश्रध्दा के प्रति संघर्ष करता है।समग्र नाटक में सामाजिक सघर्ष की अभिव्यक्ति हुई है'कहै कबीर सुनो भाई साधो'नाटक में कोतवाल जुलाहा बस्ती के लागों को हर तरह से दबाने का प्रयास करता है।मध्यकालिन परिवेश को जीवित करते हुए नाटककार ने तत्कालिन सामाजिक,राजनैतिक,आर्थिक स्थितियों बिम्ब जरूर खींचे है लेकिन कबीर के संतई व्यक्तित्व में जो अक्खडता,विद्रोह,शोषणता का प्रतिकार,अंध रूढियों का तिरस्कार,नीडरता का भाव था।इस नाटक की कथावस्तु कबीर के माध्यम से सत्य का उदघाटन करती है।नाटक की संवेदना में छुआछूत,जातिवाद,साम्प्रदायिकता,शासन के दुराचार, शोषण आदि पक्षों के आवरण दवारा सच्चाई पर जो पर्दा पडा है कबीर उसे उठाते हैं।वह समाज के शोषण और जुल्मों को अपनी चमडी पर रेंगते हुए अनुभव करता है।नाटककार ने इस नाटक के माध्यम सामाजिक व्यवस्था की विद्रुपता तथा चारों ओर व्याप्त भ्रष्टाचार का अंकन हुआ है।डॉ.वीणा की दृष्टि में –'कहै कबीर सूनो भाई साधो सींगधारी से भी कमजोर नाटक है,कबीर का साथी उसे सारा वृतांत बतलाता है कि हम जुलाह कब तक बर्दास्त करें।इसलिए कबीर उन्हें व्यवस्था के प्रति संघर्ष करने के लिए चेताता है.अतएव : कबीर अपनी विद्रही वाणी में समझाते हुए

कहता है कि बोधन ठंडे दिमाग से विचार करों निर्भय होकर उनकी करतुतों को उघाडों,सत्य एवं प्रेम के रास्ते पर चलते हुए परिणाम की परवाह किये बगैर सिर के दो पर उफ न करों.इस उंद्धेश को ध्यान में रखते हुए कबीर के साथ जुलाह समाज भी संघर्ष करने पर उतारू हो जाता है।इस नाटक में 15 दृश्य है.इस नाटक की भाषा शैली और संवाद योजना अत्यंत कलात्मक एवं मौलिक है.अंत में कह सकते है कि नाटक में आंतरिक मनःस्थितियों की तरह ही बाहयजीवन की स्थितियो में निरंतर चलनेवाले संघर्ष को व्यक्त किया गया है।

'सींगधारी'इस नाटक की रचना सन 1988 में हुई है।यह नाटक नुक्कड नाटक के रूप में प्रकाशित हुआ था।नरेंद्र मोहन का यह नाटक सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था पर गहरी चोट करता हैं।प्रस्तुत नाटक विद्रुपताओं एवं जनविरोधि शक्तियों,सत्तावादी नेताओं की स्वार्थ प्रवृतियों,अराजकता,अवसरवादिता,शोषण और मूल्यहीनता आदि सारे तत्वों को उजागर करता हैं।इस नाटक की कथावस्तु राज अर्थात नेता के सिर सींग होते हैं।राजा मानों हुकूमत के सिर सींग और उससे लिपटे मंत्री कोतवाल और साहुकार। इस नाटक से यह साबित होता है कि नेता ही सींगधारी है। प्रस्तुत नाटक में अनेक चरित्र आते है जिसमें राजा अर्थात नेता, पत्रकार, वकील, मास्टर, जज, पेशकार आदि। इस नाटक में एक दूसरा भी दल है जिसमें शीव विमल,मास्टर और प्यारेलाल आदि। नेता और शिव का संघर्ष यथार्थवादी है। इस नाटक में विचारों के साथ–साथ कोमल और कठोर दानों भावों की अभिव्यक्ति हुई है।

'नो मैस लैड'इस नाटक में नाटककार ने 'टोबा टेकसिंह'विभाजन की त्रासदी को अभिव्यक्त किया है।नाटककार इस त्रासदी के स्वयं साक्षात्कार रहे है। जिन्होंने इस विषम परिस्थियों को झेला और भोगा था इसकी गहरी टीस नाटककार के मन पर पडी है। जातियों को वर्गो में बाट दिया गया है। बल्कि इसके साथ–साथ दो भौगोलिक सीमा में भी बटा दिया गया । किंतु इन दो सीमाओं के बीच खाली जमीन का टुकडा बच गया था वह 'वह मैस लैड'कहलाया गया है जो मानवीय भावनाओं के साथ जुडा हुआ है। इस नाटक के प्रमुख चरित्रों में अब्दुल, बिशनसिंह, सुराजुद्धीन आदि है। ये सभी चरित्र मानसिक विकृतियों के शिकार होते है। प्रस्तुत नाटक में मास्टर रामकिशन 'जुगराफियों'की एकता को बरकरार देखना चाहते है। इस नाटक के सीभी पात्र दर्द और वेदना से पीडित है। हीरा नामक पात्र अपनी हवस मिटाने के लिए एक सुंदर औरत का शिकार कर लेता है। इस नाटक में मानवीय मूल्य का हनन हुआ है।

'अभंगगाथा'नरेंद्र मोहनजी का यह नाटक मराठी के संत कवि तुकाराम पर आधारित है। इस नाटक का प्रमुख नायक तुकाराम है। वह वारकरी संप्रदाय का सर्वक्षेष्ठ संत भी है।यह विदित है की वह भगवान विठठलजी का उपासक है। वह किर्तनकार गायक एवं घुम्मकड प्रवृतियों का है। वह वीणा,करताल और मृद्रुंग लेकर अभंग गाता है। इस नाटक को लेकर इस नाटक को लेकर वीरेंद्रसिंह लिखते है''अंभगगाथा में मराठी कवि संत तुकाराम के अंभगों के सर्जनात्मक सामाजिक और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को इस प्रकार संयोजित किया गया है कि तुकाराम के शब्द विद्रोह चेतना और सृजनात्मक प्रतिभा की उँचाई को स्पश करते हैं जो मानसिक उर्ध्वगामी के परममनोवैज्ञानिक रूप को संकेतित करता है।''प्रस्तुत नाटक तुकाराम के जीवन और तत्कालिन परिवेश के बहाने आज में झॉकने की कोशिश है।इस नाटक में सामाजिक,आर्थिक,धार्मिक विषमता को प्रकट किया है। इस नाटक में तीन अंक एवं ग्यारह दृश्य है। आत्मसंवाद और गीतयोजना को बडी कलात्मकता के साथ प्रयुक्त किया है।नाटककार के अनुसार ''आज भी संत तुकाराम जैसे संतई मिजाज और साहित्य की जरूरत है जो समाज में फैले जातिवाद, अलगाववाद, संप्रदाय, आतंकवाद, हिंसा,प्रांतवाद,संकीर्णवाद जैसी जडीभूत मानसिकता से लोगों को निकाल सकें।

'कलंदर'डॉ.नरेंद्र मोहन का यह तीसरा नाटक है। इस नाटक की पृष्ठभूमी ऐतिहासिक है। नाटककारने कलंदर की पूरी जानकारी हासिल करने के ही इस नाटक को गढने का प्रयास किया है। उन्होंने कलंदर मौलिवियों और सूफियों को उनकी चारित्रिक प्रवृतियों के साथ चित्रित करने का प्रयास किया है। इस नाटक का प्रमुख चरित्र कलंदर है। वह बागी सच्चाईपरस्त अल्लाह के नूर बेपरवाह पाखंडों,रीति रिवाजों और पारिवारिक बंधनों से मुक्त था। कलंदर अन्याय,अत्याचार के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद करता है और अपनी राह पर निडर होकर चलता ळें एक बच्चा हमीद है जिसके हाथों से एक कलंदर रोटी छीन लेता है।फिर एक परिपक्व हमीद है जो एक पूरा कलंदर बन जाता है।जो बाद में पदभ्रष्ट कलंदरों को अस्वीकार करते हुए स्वयं को कलंदरों के आदर्श आचरणों में परिवर्तीत करता है।नाटककार ने यहॉ सूफियों और कलंदरों के संघर्षो को कथा के जरिए प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।कलंदर उस समाज के क्रांतिकारी और विद्रोही तत्व के थे जिनमें अक्खडता,फक्कडता और घुमक्कड की प्रवृतियॉ विराजमान थी।सच्चाई उनका हथियार था और फक्कडता इनकी शक्ति।उनकी यही क्रांतिकारी, विलक्षणता, संघष्झशीलता, फक्कडता, अखडता और साफगोई आदि विशेषताएँ नाटककार को अपनी और आकर्षित करती है।

'मिस्टर जिन्ना'डॉ.नरेंद्र मोहन का यह छठा नाटक है।यह नाटक चुनौतिपूर्ण हैं।मोहम्मद अली जिन्ना के डाइवर के नजरिए से पेशे मण्टो का 'मेरा साहब'रेखाचित्र इस नाटक की कथावस्तू का मूलाधार है। प्रस्तुत नाटक के दों अंक है और कुल छःअंकों में विभाजित है।इस नाटक सें स्पष्ट होता है की नाटककार की जिन्ना के प्रति आस्था और निश्वास है तो दूसरी ओर उनके दृष्टिकोण को परखना चाहता है।नाटककार यह स्पष्ट करना चाहता है की जिन्ना को एक बडा राजनेता बनाने में उसके अभिनेता व्यक्तित्व का बडा हाथ था ।

'मंच अधरें में'नरेंद्र मोहन का यह नाटक नाविण्यपूर्ण जान पडता है।इस नाटक का केंद्र बिंदु विचार और उध्देलन है।तत्कालिन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को केद्र में रखकर लिखा गया है।इस नाटक का राजकुमार संजय गांधी यह नाटकं यथार्थ के धरातल पर रचा गया है।इस नाटक के रंगनाथ, सुरेखा, सुदर्शन, नंदिता, लारेन्स आदि प्रमुख पात्र ळें

## संदर्भ ग्रथ


1. स्वातंत्रयोंत्तर हिंदी रंग नाटक : सुदर्शन मजीठिया
2. हिंदी नाटक मूल्य :संक्रमण :गिरीराज शर्मा
3. हिंदी के प्रतिक नाटक :डॉ.रमेश गौतम
4. नाटय विमर्श : नरनारायण राय
5. साठोत्तरी हिंदी नाटक :डॉ.नीलिमा शर्मा